कृष्णर्षिगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

शिवप्रसाद

प्राक्मध्ययुगीन एवं मध्ययुगीन निर्ग्रन्थदर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय के गच्छों में कृष्णर्षिगच्छ भी एक था। आचार्य वटेश्वर क्षमाश्रमण के प्रशिष्य एवं यक्षमहत्तर के शिष्य कृष्णमुनि की शिष्यसंतति अपने गुरु के नाम पर कृष्णर्षिगच्छीय कहलायी। इस गच्छ में जयसिंहसूरि (प्रथम), नयचन्द्रसूरि (प्रथम), जयसिंहसूरि (द्वितीय), प्रसन्नचन्द्रसूरि (प्रथम व द्वितीय), महेन्द्रसूरि, नयचन्द्रसूरि, (द्वितीय व तृतीय) आदि कई विद्वान् आचार्य हुए हैं। इस गच्छ में जयसिंहसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि और नयचन्द्रसूरि इन तीन पट्टधर आचार्यों के नामों की प्रायः पुनरावृत्ति मिलती है, अतः यह माना जा सकता है कि इस गच्छ के मुनिजन संभवतः चैत्यवासी रहे होंगे।

कृष्णर्षिगच्छ के इतिहास के अध्ययन के लिये इस गच्छ के मुनिजनों की कृतियों की प्रशस्तियाँ तथा उनकी प्रेरणा से प्रतिलिपि करायी गयी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की दाताप्रशस्तियाँ उपलब्ध हैं। इस गच्छ से सम्बद्ध कोई पट्टावली प्राप्त नहीं होती। अभिलेखीय साक्ष्यों के अन्तर्गत इस गच्छ के मुनिवरों द्वारा प्रतिष्ठापित जिन-प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों की चर्चा की जा सकती है। ये लेख वि० सं० १२८७ से वि० सं० १६१६ तक के हैं। साम्प्रत लेख में उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

कृष्णर्षिगच्छ का उल्लेख करने वाला सर्वप्रथम साक्ष्य है - गच्छ के आदिपुरुष कृष्णर्षि के शिष्य जयसिंहसूरि द्वारा वि० सं० ९१५ / ई० सं० ८५९ में रचित **धर्मोपदेशमालाविवरण** की प्रशस्ति[1]। इसमें जो गुरु-परम्परा दी गयी है, वह इस प्रकार है :

वटेश्वर क्षमाश्रमण
|
तत्त्वाचार्य
|
यक्षमहत्तर
|
कृष्णर्षि
|
जयसिंहसूरि [वि० सं० ९१५ / ई० सन् ८५९ में **धर्मोपदेशमालाविवरण** के रचनाकार]

शीलोपदेशमाला के कर्त्ता जयकीर्ति संभवतः इन्हीं जयसिंहसूरि के शिष्य थे[2]।

दाक्षिण्यचिह्न उद्योतनसूरि ने **कुवलयमालाकहा**[3] (रचनाकाल शक सं० ७०० / ई० स० ७७८) की प्रशस्ति में अपने गुरु-परम्परा की लम्बी तालिका दी है, जिसमें वटेश्वरसूरि का भी उल्लेख है। इस तालिका में सर्वप्रथम वाचक हरिगुप्त का नाम आता है, जो तोरराय (तोरमाण) के गुरु थे। उनके पट्टधर कवि देवगुप्त हुए, जिन्होंने **सुपुरुषचरिय** या **त्रिपुरुषचरिय** की रचना की। कवि देवगुप्त के शिष्य शिवचन्द्रगणि महत्तर हुए जिनके नाग, वृन्द, दुर्ग, मम्मट, अग्निशर्मा और वटेश्वर ये ६ शिष्य थे। वटेश्वर क्षमाश्रमण ने आकाशवप्रनगर (अम्बरकोट/अमरकोट) में जिनमंदिर का निर्माण करवाया। वटेश्वर के शिष्य तत्त्वाचार्य हुए। **कुवलयमालाकहा** के रचनाकार दाक्षिण्यचिह्न उद्योतनसूरि इन्हीं तत्त्वाचार्य के शिष्य थे। इस बात को प्रस्तुत तालिका से भली भांति समझा जा सकता है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

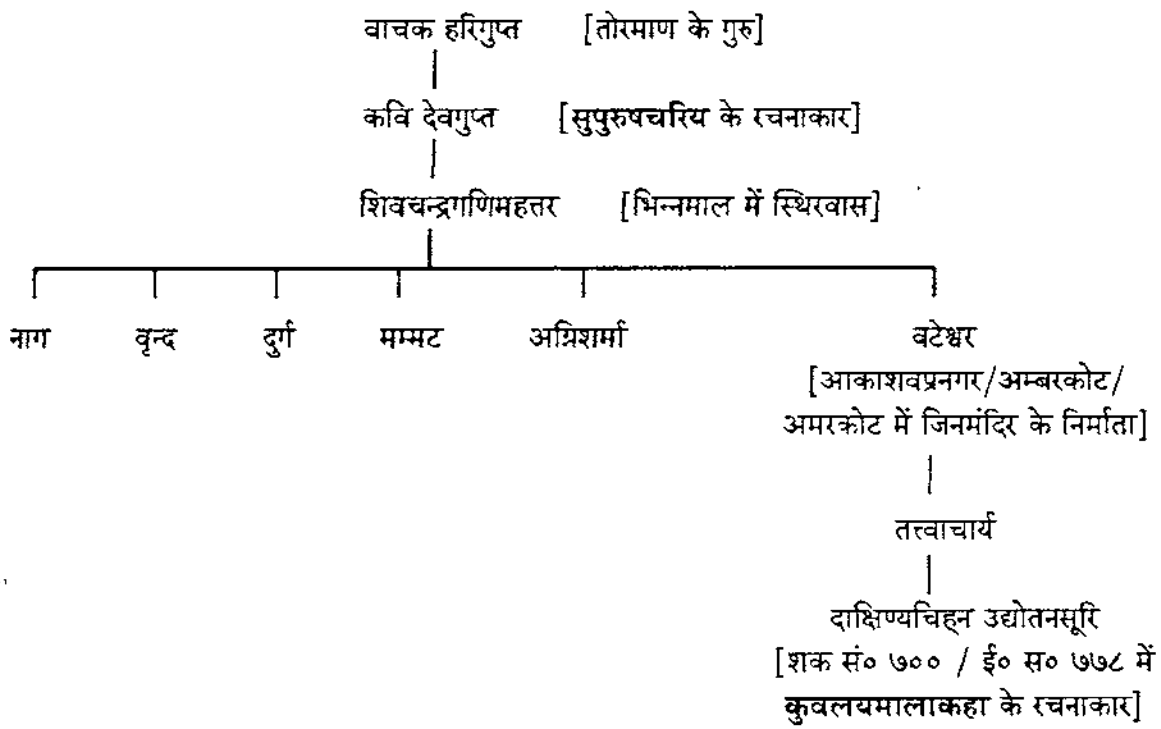

उक्त दोनों प्रशस्तियों की गुरु-परम्परा की तालिकाओं के मिलान से उद्योतनसूरि और कृष्णर्षिगच्छीय जयसिंहसूरि की गुरु-परंपरा की जो संयुक्त तालिका बनती है, वह इस प्रकार है:

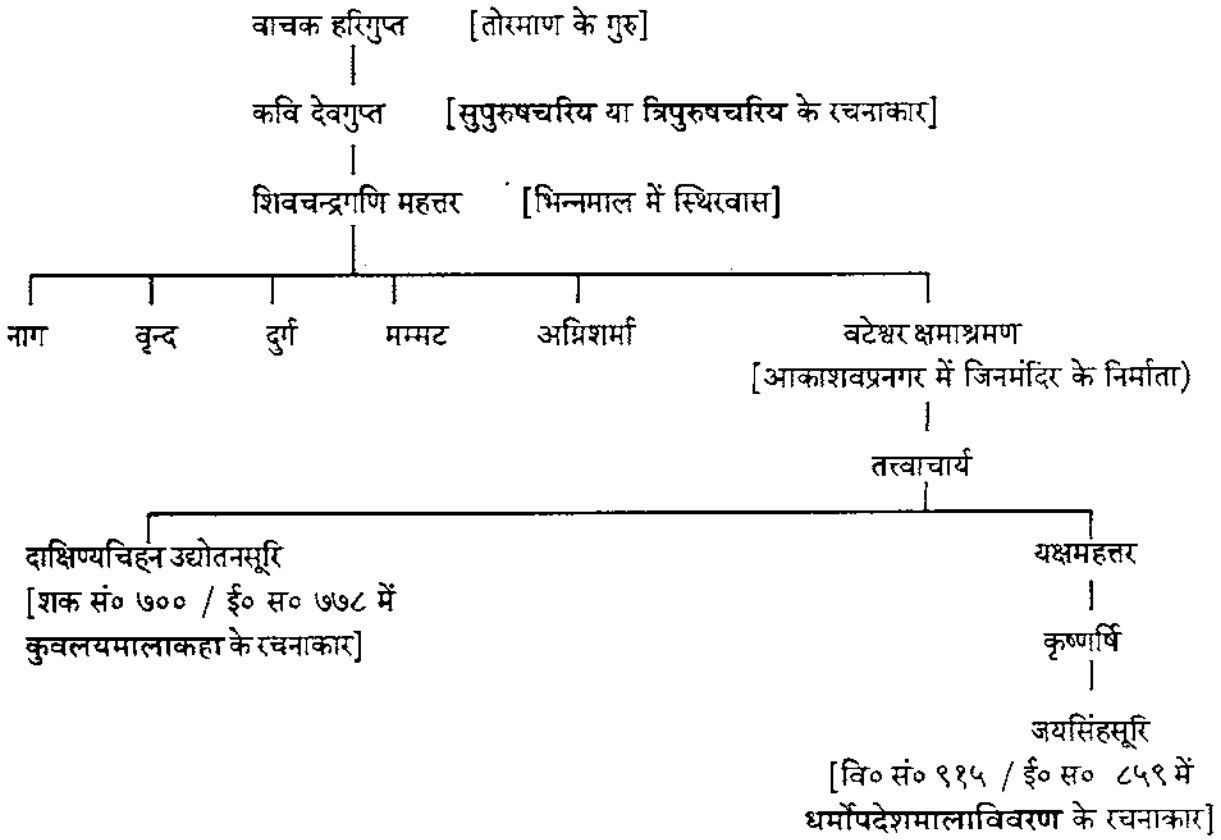

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(थारापद्रगच्छ से सम्बद्ध वि० सं० १०८४ / ई० स० १०२८ के लेख[४] में इस गच्छ के आचार्य पूर्णभद्रसूरि ने भी वटेश्वर क्षमाश्रमण का अपने पूर्वज के रूप में उल्लेख किया है।)

कृष्णर्षिगच्छ का उल्लेख करने वाला द्वितीय साहित्यिक साक्ष्य है वि० सं० १३९० / ई० स० १३३४ में इस गच्छ के भट्टारक प्रभानंदसूरि द्वारा आचार्य हरिभद्र विरचित **जम्बूद्वीपसंग्रहणीप्रकरण**[५] पर लिखी गई टीका की प्रशस्ति। यद्यपि इसमें टीकाकार प्रभानन्दसूरि के अतिरिक्त किसी अन्य आचार्य या मुनि का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु इनकी प्रेरणा से वि० सं० १३९१ / ई० स० १३३५ में लिपिबद्ध करायी गयी **त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित** की प्रतिलिपि की दाताप्रशस्ति[६] से इनके गुरु-परम्परा के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है। इसके अनुसार कृष्णर्षिगच्छ में सुविहित शिरोमणि पद्मचन्द्र उपाध्याय हुए जिनकी शाखा में भट्टारक पृथ्वीचन्द्रसूरि हुए। उनके पट्टधर प्रभानन्दसूरि के उपदेश से एक श्रावकपरिवार द्वारा उक्त महत्त्वपूर्ण कृति की प्रतिलिपि करायी गयी।

सुविहितशिरोमणि पद्मचन्द्र उपाध्याय
|
भट्टारक पृथ्वीचन्द्रसूरि
|
प्रभानन्दसूरि
[वि० सं० १३९० / ई० सन् १३३४ में **जम्बूद्वीपसंग्रहणीप्रकरणसटीक** के रचनाकार,
इनके उपदेश से वि० सं० १३९१ / ई० स० १३३५ में
त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित की प्रतिलिपि की गयी]

कृष्णर्षिगच्छ का उल्लेख करने वाला तृतीय साहित्यिक साक्ष्य है इसी गच्छ के आचार्य जयसिंहसूरि द्वारा रचित **कुमारपालचरित** (रचनाकाल वि० सं० १४२२ / ई० १३६६) की प्रशस्ति[७], जिसके अन्तर्गत ग्रन्थकार ने अपनी गुरुपरम्परा दी है। इसके अनुसार चारण (वारण) गण की वज्रनागरी शाखा के.....कुल में कृष्णनामक महातपस्वी मुनि हुए। उनकी परम्परा में निर्ग्रन्थचूडामणि आचार्य जयसिंहसूरि हुए, जिन्होंने वि० सं० १३०१ / ई० स० १२४५ में मरुभूमि से मंत्रशक्ति द्वारा जल निकाल कर प्यास से व्याकुल श्रीसंघ की प्राणरक्षा की। इनके शिष्य प्रभावक शिरोमणि प्रसन्नचन्द्रसूरि हुए। इनके पट्टधर निस्पृहशिरोमणि महेन्द्रसूरि हुए, जिनका सम्मान मुहम्मदशाह ने किया था। इन्हीं के शिष्य जयसिंहसूरि हुए, जिन्होंने वि० सं० १४२२ / ई० सन् १३६६ में उक्त कृति की रचना की जिसकी प्रथमादर्श प्रति इनके प्रशिष्य नयचन्द्रसूरि ने लिखी।

कृष्णमुनि
|
निर्ग्रन्थचूडामणि जयसिंहसूरि [वि० सं० १३०१ / ई० सं० १२४५ में मरुभूमि में जल निकालकर संघ की प्राणरक्षा की]
|
प्रभावक शिरोमणि प्रसन्नचन्द्रसूरि
|
निस्पृह शिरोमणि महेन्द्रसूरि [मुम्मदशाह द्वारा सम्मानित]
|
जयसिंहसूरि [वि० सं० १४२२ / ई० स० १३६६ में **कुमारपालचरित** के रचनाकार]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य जयसिंहसूरि ने भासर्वज्ञ कृत न्यायसार पर न्यायतात्पर्यदीपिका[9] की भी रचना की।

जयसिंहसूरि के प्रशिष्य एवं प्रसन्नचन्द्रसूरि के शिष्य नयचन्द्रसूरि ने वि० सं० १४४४ / ई० स० १३८८ के आसपास हम्मीरमहाकाव्य[8] और रम्भामञ्जरीनाटिका[10] की रचना की। इन रचनाओं की प्रशस्तियों में इन्होंने अपने प्रगुरु जयसिंहसूरि का सादर स्मरण किया है।

जयसिंहसूरि
|
प्रसन्नचन्द्रसूरि
|
नयचन्द्रसूरि
[वि० सं० १४४४ / ई० स० १३८८ के लगभग
हम्मीरमहाकाव्य और
रम्भामंजरीनाटिका के रचनाकार]

यही इस गच्छ से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्य हैं। जैसा कि पूर्व में कहा गया है, इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें भी उपलब्ध हुई हैं। इन पर उत्कीर्ण लेखों का विवरण इस प्रकार है :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख क्रमांक	प्रतिष्ठापना वर्ष वि० सं०	माह, तिथि, वार	प्रतिष्ठापक आचार्य	प्रतिमालेख	वर्तमान प्रतिष्ठा स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१२८७	फाल्गुन वदि ३, रविवार	नयचन्द्रसूरि	-	विमलवसही, आबू	अर्बुदप्राचीन जैन लेख संदोह, सं० मुनि जयंतविजय, लेखाङ्क. २५१.
२	१३७९	तिथि विहीन	प्रसन्नचन्द्रसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	पंचायती मंदिर, कलकत्ता	जैन लेख संग्रह, भाग १, सं० पूरनचन्द नाहर, लेखाङ्क. ४२६
३.	१४१७	आषाढ सुदि ५, गुरुवार	जयसिंहसूरि	-	विमलवसही, आबू	मुनिजयंतविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क. ३८१.
४.	१४८३	माघ सुदि ५, गुरुवार	प्रसन्नचंद्रसूरि के पट्टधर नयचन्द्रसूरि	आदिनाथ की धातु-प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	बीकानेर जैनलेख संग्रह, सं० अगरचन्द नाहटा, लेखाङ्क-७२४.
५.	१४८८	मार्गशीर्ष सुदि ५ गुरुवार	नयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की धातुकी पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीरजिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	वही, लेखाङ्क-१३४३.
६.	१४९८	फाल्गुन वदि १० सोमवार	नयचन्द्रसूरि	सुविधिनाथ की धातुकी प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, कातरग्राम	प्राचीन लेख संग्रह, सं० विजयधर्म सूरि, लेखाङ्क- १७४
७.	१४९८	फाल्गुन वदि १० सोमवार	जयसिंहसूरि के संतानीय नयचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जैसलमेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग ३, लेखाङ्क. २३१४.
८.	१५०१	माघ सुदि १० सोमवार	नयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, पनवाड़.	प्रतिष्ठा लेख संग्रह, सं० विनयसागर, लेखाङ्क. ३५१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१५०६	पौष सुदि ५	नयचन्द्रसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १ लेखाङ्क ९८.
१०.	१५०६	"	"	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखाङ्क ९९.
११.	१५०६	पौष सुदि ९	"	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर, तूलापट्टी, कलकत्ता	जैनधातुप्रतिमालेख, सं० मुनि कान्तिसागर, लेखाङ्क १०५.
१२.	१५१०	चैत्र वदि ५ शनिवार	प्रसन्नचन्द्रसूरि	मुनिसुव्रत की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जयवैभव, सं० मुनिकान्तिसागर, लेखाङ्क १२३
१३.	१५१२	माघ वदि १३ शुक्रवार	पुण्यरत्नसूरि	-	बालावसही, शत्रुञ्जय	वही, लेखाङ्क. १३७.
१४.	१५२१	ज्येष्ठ सुदि १० बुधवार	नयचन्द्रसूरि के पट्टधर जयसिंहसूरि	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, खेड़ा, गुजरात	जैनधातुप्रतिमालेख संग्रह, भाग २, सं० मुनि बुद्धिसागर, लेखाङ्क ४५५.
१५.	१५२४	मार्गशिर वदि ५ रविवार	लक्ष्मीसागरसूरि	चन्द्रप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रामपुरा	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ६४८
१६.	१५३२	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	जयसिंहसूरि	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १०७५.
१७.	१५३४	आषाढ़ सुदि १ गुरुवार	नयचन्द्रसूरि के पट्टधर जयचन्द्रसूरि	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	भाण्डागारस्थ धातु- - प्रतिमा, वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	वही, लेखाङ्क १३७८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८.	१५३४	माघ सुदि.. शुक्रवार	भ. प्रसन्नचन्द्रसूरि के पट्टधर नयचन्द्रसूरि	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, भिनाय	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७८२.
१९.	१५८५ (१५९४ ?)	ज्येष्ठ सुदि ६	जयशेखरसूरि	वासुपूज्य की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	नेमिनाथ जिनालय, सेठियों का वास, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३२६.
२०.	१५९५	माघ वदि २ बुधवार	जयसिंहसूरि	अजितनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, हनुमानगढ़, बीकानेर	वही, लेखाङ्क २५३४.
२१.	१६१६	माघ सुदि ११	धनचन्द्रसूरि, उपाध्याय कमलकीर्ति आदि		विमलवसही आबू	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १५५.
२२.	१६१६	माघ सुदि ११	धनचन्द्रसूरि, उपाध्याय कमलकीर्ति आदि		विमलवसही आबू	वही, लेखाङ्क २०६.

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के कुछ मुनिजनों की गुरु-परम्परा की एक तालिका इस प्रकार बनायी जा सकती है :

नयचन्द्रसूरि (प्रथम) [वि० सं० १२८७]

प्रसन्नचन्द्रसूरि [वि० सं० १३७९]

जयसिंहसूरि [वि० सं० १४१७]

प्रसन्नचन्द्रसूरि (द्वितीय)

नयचन्द्रसूरि (द्वितीय) [वि० सं० १४८३-१५०६]

जयसिंहसूरि [वि० सं० १५२१-३२] जयचन्द्रसूरि [वि० सं. १५३४] लक्ष्मीसागरसूरि [वि० सं० १५२४]

जयसिंहसूरि [वि० सं० १५९५]

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा निर्मित इस तालिका में नयचन्द्रसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि और जयसिंहसूरि ये तीन नाम **कुमारपालचरित**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और **हम्मीरमहाकाव्य** की प्रशस्तियों में भी आ चुके हैं। दोनों ही साक्ष्यों में इन नामों की प्रायः पुनरावृत्ति होती रही है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि कृष्णर्षिगच्छ की इस शाखा में पट्टधर आचार्यों को जयसिंहसूरि, प्रसन्नचन्द्रसूरि और नयचन्द्रसूरि ये तीन नाम प्रायः प्राप्त होते रहे। उक्त तर्क के आधार पर वि० सं० १२८७ के प्रतिमालेख में उल्लिखित नयचन्द्रसूरि को निर्ग्रन्थचूडामणि जयसिंहसूरि (जिन्होंने वि० सं० १३०१ में मरुभूमि में भीषण ताप के समय मंत्रशक्ति द्वारा भूमि से जल निकाल कर श्रीसंघ की प्राणरक्षा की थी) के गुरु (नयचन्द्रसूरि ?) से समीकृत किया जा सकता है। किन्तु इनके शिष्य प्रसन्नचन्द्रसूरि और वि० सं० १३७९ में प्रतिमाप्रतिष्ठापक प्रसन्नचन्द्रसूरि को अभिन्न मानने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि दोनों आचार्यों की कालावधि में पर्याप्त अन्तर है। वि० सं० १४१७ के प्रतिमालेख में उल्लिखित जयसिंहसूरि, **कुमारपालचरित** और **न्यायतात्पर्यदीपिका** (रचनाकाल वि० सं० १४२२/ई० स० १३६६) के रचनाकार जयसिंहसूरि से निश्चय ही अभिन्न हैं।

वि० सं० १४८३ से वि० सं० १५०५ के मध्य प्रतिमा-प्रतिष्ठापक नयचन्द्रसूरि और **हम्मीरमहाकाव्य** (रचनाकाल वि० सं० १४४४ / ई० स० १३८८) और **रम्भामंजरीनाटिका** के कर्त्ता नयचन्द्रसूरि को उनके कालावधि के आधार पर अलग-अगल आचार्य माना जा सकता है और यह कहा जा सकता है कि वि० सं० १४४४ और वि० सं० १४८३ के मध्य जयसिंहसूरि और प्रसन्नचन्द्रसूरि ये दो आचार्य हुए, परन्तु उनके बारे में हमें कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित लक्ष्मीसागरसूरि (वि० सं० १५२४) और जयशेखरसूरि (वि० सं० १५८४) के बारे में हमें अन्यत्र कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

इस प्रकार साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा निर्मित तालिकाओं के परस्पर समायोजन से कृष्णर्षिगच्छीय मुनिजनों के आचार्य परम्परा की एक विस्तृत तालिका बनती है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

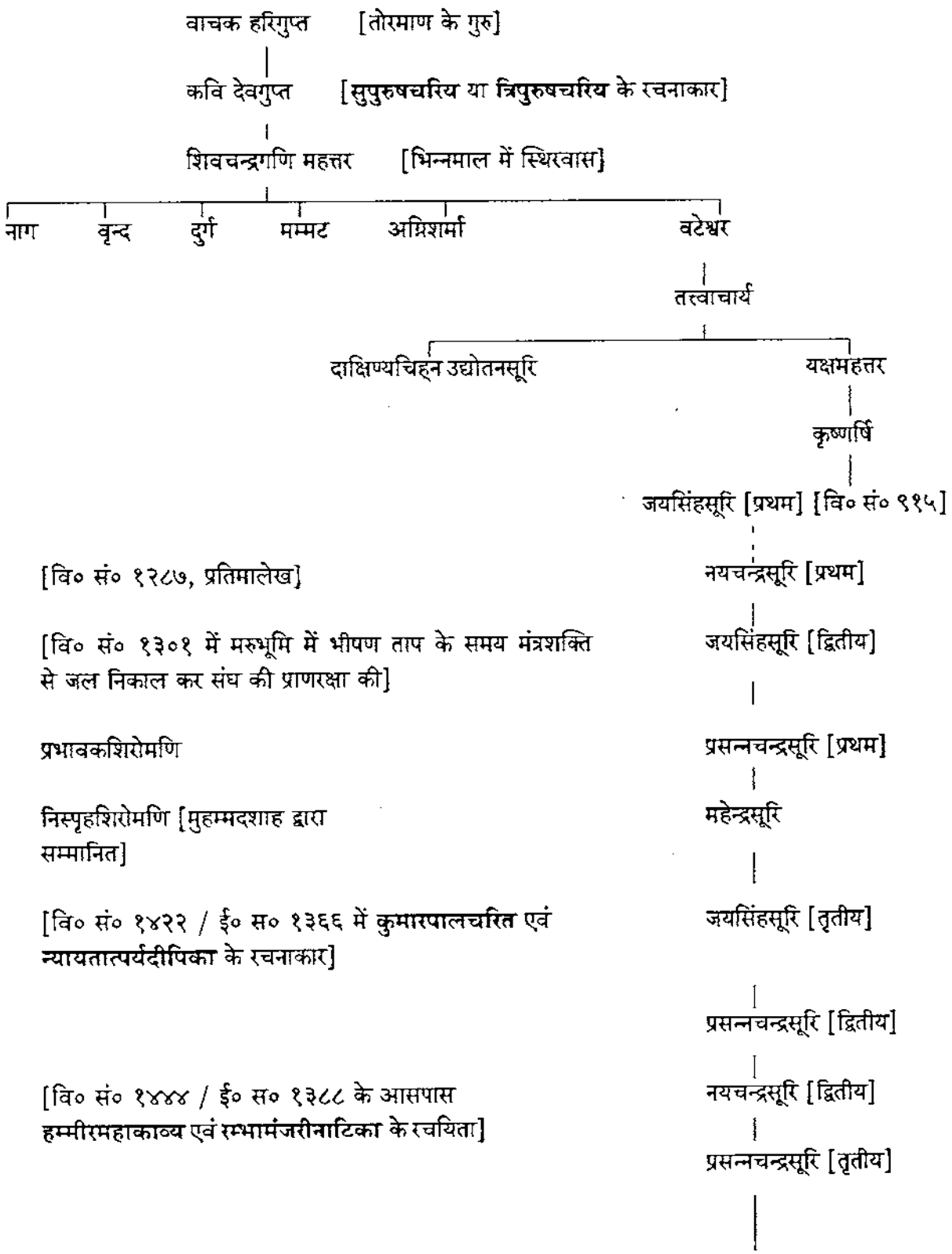

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

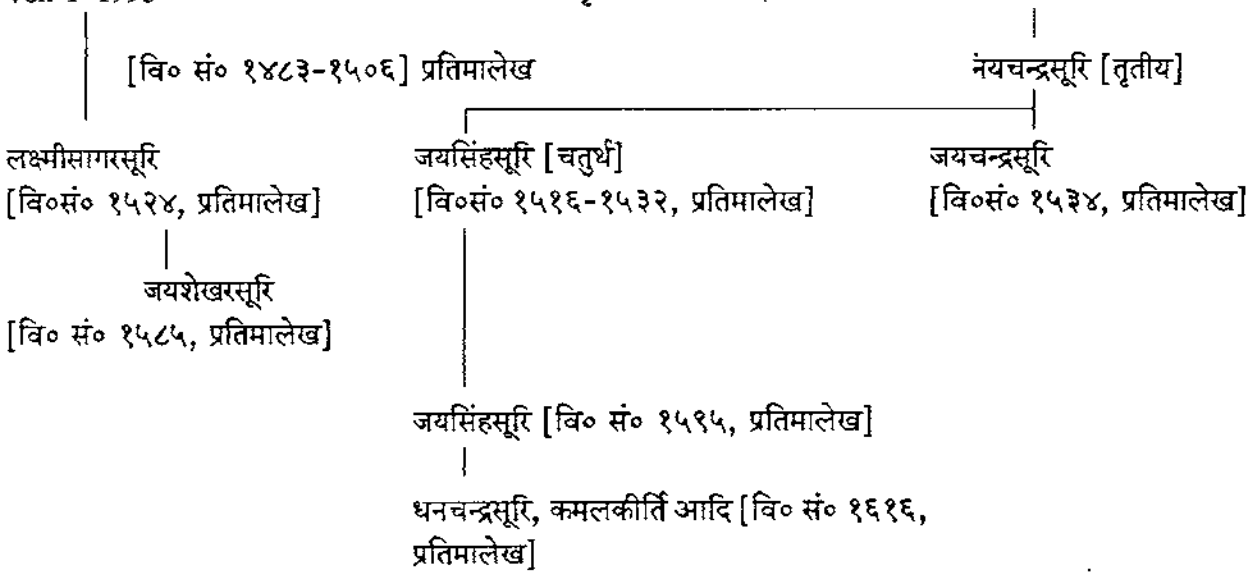

अभिलेखीय साक्ष्यों द्वारा कृष्णर्षिगच्छ की एक कृष्णर्षितपाशाखा का भी पता चलता है। इस शाखा से सम्बद्ध वि० सं० १४५० से वि० सं० १५१० तक के प्रतिमालेख प्राप्त हुए हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

१.	१४५०	माघ वदि ९ सोमवार	पुण्यप्रभसूरि	पद्मप्रभ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर.	नाहटा, पूर्वोक्त लेखाङ्क ५५८.
२.	१४७३	ज्येष्ठ सुदि ५	पुण्यप्रभसूरि	सुपार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, मालपुरा.	विनयसागर, पूर्वोक्त-लेखाङ्क २११.
३.	१४८३	भाद्रपद वदि ७ गुरुवार	पुण्यप्रभसूरि के पट्टधर जयसिंहसूरि	देहरीनं १८ पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जीरावला	अर्बुदाचल प्रदक्षिणा जैनलेख संग्रह, सं० मुनिजयन्त विजय, लेखाङ्क १३८.
४.	१४८३	भाद्रपद वदि ७ गुरुवार	पुण्यप्रभसूरि के पट्टधर जयसिंहसूरि	देहरी नं. २० पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जीरावला	वही, लेखाङ्क १४१.
५.	१४८९	माघ वदि ६ रविवार	जयसिंहसूरि	आदिनाथ की धातुप्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ७४४.
६.	१५०३	आषाढ़ सुदि ९	जयसिंहसूरि के पट्टधर जयशेखरसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, पुरानी मंडी, जोधपुर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखाङ्क ५८६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७.	१५०५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	जयसिंहसूरि के पट्टधर जयशेखरसूरि	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क ८९०.
८.	१५०८	वैशाख सुदि ५ सोमवार	जयसिंहसूरि के पट्टधर जयशेखरसूरि	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	लक्कड़वास का मंदिर, उदयपुर	विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, लेखाङ्क २३७.
९.	१५१०	मार्गशीर्ष सुदि १० रविवार	जयसिंहसूरि की शाखा के कमलचन्द्रसूरि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखाङ्क १२१३.

अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर कृष्णर्षिगच्छ की **कृष्णर्षितपाशाखा** की मुनिजनों के गुरु-परम्परा की जो तालिका बनती है, वह इस प्रकार है:

पुण्यप्रभसूरि [वि० सं० १४५०-१४७३, प्रतिमालेख]

जयसिंहसूरि [वि० सं० १४८३-१४८७, प्रतिमालेख]

कमलचन्द्रसूरि [वि० सं० १५१०, प्रतिमालेख]

जयशेखरसूरि [वि० सं० १५०३-१५०८ प्रतिमालेख]

कृष्णर्षितपाशाखा के प्रवर्त्तक कौन थे, यह शाखा कब और किस कारण से अस्तित्व में आयी, इस बात की कोई जानकारी नहीं मिलती।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कृष्णर्षिगच्छ वि० सं० की ९वीं शती के अंतिम चरण तक अवश्य ही अस्तित्व में आ चुका था। वि० सं० की १० वीं शती के प्रारम्भ का केवल एकमात्र विवरण है जयसिंहसूरि कृत **धर्मोपदेशमालाविवरण** की प्रशस्ति। इसके लगभग ३५० वर्षों पश्चात् ही इस गच्छ के बारे में विवरण प्राप्त होते हैं और ये साक्ष्य वि० सं० की १७वीं शती के प्रारम्भ तक जाते हैं। यद्यपि इस गच्छ के बारे में लगभग ३५० वर्षों तक कोई विवरण प्राप्त नहीं होता, किन्तु इस गच्छ की अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान रही होगी, इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। वि० सं० की १६वीं शती के पश्चात् इस गच्छ के सम्बन्ध में कोई भी विवरण न मिलने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय तक इस गच्छ का अस्तित्व समाप्त हो गया होगा और इसके अनुयायी किसी अन्य गच्छ में सम्मिलित हो गये होंगे।

संदर्भसूची :-

१. **धर्मोपदेशमालाविवरण,** सं० पं० लालचंद भगवानदास गांधी, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क २८, बम्बई १९४९, पृ० २२८-२३०; पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, **ऐतिहासिक लेखसंग्रह,** श्री सयाजी साहित्यमाला, पुष्प ३३५, वड़ोदरा १९६३, पृ० ३०४ और आगे; और त्रिपुटी महाराज, **जैन परम्परानो इतिहास,** श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ५१, अहमदाबाद १९५२, पृ० ५१८ और आगे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. **शीलोपदेशमाला**, गुजराती भाषान्तर, अनुवादक हरिशंकर कालिदास शास्त्री, अहमदाबाद १९००; पं० लालचंद भगवानदास गांधी, **ऐतिहासिक०**, पृ० ३१४.

३. **कुवलयमालाकहा**, सं० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ४५, बम्बई १९५९, पृ० २८२-२८४.

४. अम्बालाल प्रेमचंद शाह, **जैनतीर्थ सर्वसंग्रह** खंड १, भाग १, अहमदाबाद १९५३, पृ० ३९.

५. Muni Punyavijaya, *New Catalogue Of Prakrit and Sanskrit Mss. Jesalmer Collection*, L. D. Series No-36 Ahmedabad-1972, p. 303, No. 1492.

६. Muni Punyavijaya, *Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shantinath Jain Bhandar, Cambay*, Part II, G. O. S. No-149, Baroda 1966, p. 301-302.

७. H. R. Kapadia, *Descriptive Catalogue of the Govt. Collections of Mss. desposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute* Volume XIX, Section II, Part I, B. O. R. I. Pune 1967, pp. 176-178.

८. **न्यायतात्पर्यदीपिका**, सं० महामहोपाध्याय सतीशचंद्र विद्याभूषण, Asiatic Society of Bengal, Calcutta 1910.

९. **हम्मीरमहाकाव्य**, सं० मुनि जिनविजय, राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला, ग्रन्थाङ्क ६५, जोधपुर १९६८.

१०. H. D. Velankar, *Jinaratnakosha*, Bhandarkar Oriental Research Institute, Government Oriental Series, Class c, No. 4, Poona 1944, p. 329.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org